पीढ़ी-दर-पीढ़ी राष्ट्रसेवा

चौधरी रणबीर सिंह, उस गौरवमयी वंश की सशक्त कड़ी बने, जिसमें राष्ट्रसेवा को समर्पित पीढ़ी-दर-पीढ़ी जुड़ती चली जा रही हैं।

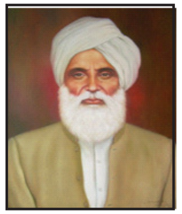

पहली पीढ़ी : चौधरी मातू राम आर्य सांघी गाँव के नम्बरदार और जैलदार जैसे प्रतिष्ठित पद पर रहे। वे रोहतक कांग्रेस के प्रमुख संस्थापकों में से थे और जिला बोर्ड के सदस्य भी रहे। 1921 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के रोहतक पधारने पर हुई विशाल जनसभा की अध्यक्षता उन्होंने ही की थी।

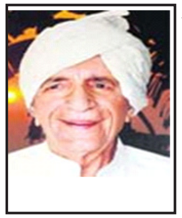

दूसरी पीढ़ी : चौधरी रणबीर सिंह ने स्वतंत्रता आन्दोलन में साढ़े तीन वर्ष की कठोर कैद और दो वर्ष की नज़रबन्दी झेलीं। संविधान सभा के सदस्य चुने गए। लोकतंत्र के इतिहास में रिकार्ड सात विभिन्न सदनों के सम्मानित सदस्य बने।

तीसरी पीढ़ी : चौधरी भूपेन्द्र सिंह हुड्डा 1991 में लोकसभा में पहुंचे। वे दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं लोकसभा के सदस्य रहे। उन्होंने 2005 में रिकार्ड मत लेकर किलोई विधानसभा से जीत दर्ज की और हरियाणा के मुख्यमन्त्री बने। उनके नेतृत्व में दूसरी बार 2009 में हरियाणा में कांग्रेस सरकार बनी है।

चौथी पीढ़ी : श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा ने अपने पूर्वजों की विरासत को आगे बढ़ाते हुए दो बार वर्ष 2005 और 2009 में रिकार्ड़ मतों से रोहतक लोकसभा क्षेत्र से चुनाव जीतकर चौदहवीं और पन्द्रहवीं लोकसभा में पहुंचे।

जिन्दगी का सफरनामा...

वर्ष	विवरण
1914	: 26 नवम्बर को रोहतक जिले के सांघी गाँव में जन्म।
1920	: प्राथमिक शिक्षा हेतु गाँव के स्कूल में प्रवेश।
1924	: प्राथमिक शिक्षा पूर्ण, गुरूकुल भैंसवाल में प्रवेश।
1933	: वैश्य स्कूल, रोहतक से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण।
1937	: रामजस कॉलेज, दिल्ली से बी.ए. परीक्षा उत्तीर्ण।
1941	: जेल यात्राओं का सिलसिला शुरू। 5 अप्रैल को प्रथम जेल यात्रा।
1947	: 10 जुलाई को संविधान सभा सदस्य निर्वाचित।
	: 14 जुलाई को संविधान सभा सदस्यता ग्रहण।
1948	: 6 नवम्बर को संविधान सभा में प्रथम भाषण।
1952	: रोहतक लोकसभा सीट से विजयी ।
1957	: दूसरी बार लोकसभा के लिए विजयी हुए।
1962	: पंजाब विधान सभा के लिए कलानौर क्षेत्र से विजयी।
	: पंजाब में बिजली व सिंचाई मंत्री।
1966	: 1 नवम्बर को हरियाणा-गठन। मंत्री पद पर रहे।
1968	: 12-14 मई को मध्यावधि चुनाव में विधानसभा के लिए विजयी।
1972	: अप्रैल में राज्यसभा के लिए चुने गए।
1977	: हरियाणा कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष बने ।
1978	: राज्यसभा में कार्यकाल सम्पन्न।
1980	: हरियाणा कांग्रेस अध्यक्ष कार्यकाल सम्पन्न ।
2009	: 1 फरवरी को रोहतक में देहावसान।
	: 2 फरवरी को रोहतक में 'समाधि-स्थल' पर अंत्येष्टि।

: प्रकाशक :

चौधरी रणबीर सिंह पीठ

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

महान स्वतंत्रता सेनानी
चौधरी रणबीर सिंह
(एक संक्षिप्त परिचय)

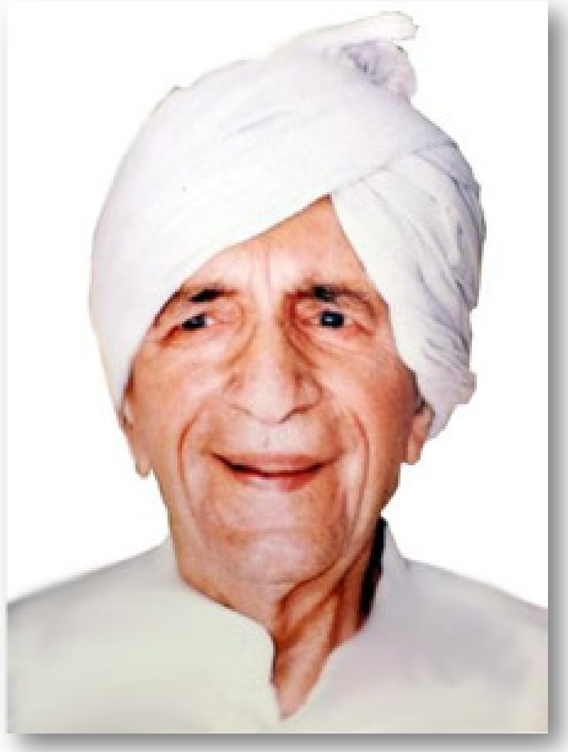

स्व. चौधरी रणबीर सिंह

(26 नवम्बर, 1914-1 फरवरी, 2009)

अनूठा व्यक्तित्व

चौधरी रणबीर सिंह असाधारण शख्सियत के धनी थे। वे चाँदी की चम्मच मुँह में लेकर पैदा नहीं हुये थे। साधारण परिवार में जन्में और उम्रभर साधारण ही बनकर रहे। उन्होंने विरासत में मिले सादगी, शिष्टाचार, राष्ट्रभक्ति, स्वाभिमान आदि गुणों को आत्मसात किया और देहात की गोद को छोड़ने का कभी नाम ही नहीं लिया। वे सच्चे कर्मयोग-पथ के अथक पथिक बने। उन्होंने सड़क से लेकर संसद तक देहात के दर्द को जुनूनी जुबां दी। स्वराज की पुकार से लेकर, दलित-पिछड़े आम जनमानस की चीत्कार तक को उसकी मंजिल तक पहुँचाने में तनिक भी कसर नहीं छोड़ी।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

चौधरी रणबीर सिंह का जन्म रोहतक जिले के सांघी गाँव में एक किसान परिवार में हुआ। उनकी माता श्रीमती मामकौर एक आदर्श गृहणी और पिता चौधरी मातूराम आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित थे। समाज में उनकी विशिष्ट प्रतिष्ठा और पहचान थी। वे गाँव के नम्बरदार से लेकर सांघी जैल के जैलदार तक बने। वे जिला में कांग्रेस पार्टी के संस्थापकों में से थे। वे पार्टी के प्रधान एवं जिला बोर्ड के सदस्य भी रहे। उन्होंने स्वराज से लेकर समाज-सुधार तक की अलख जगाई और महत्वपूर्ण आयोजनों में महत्ती भूमिका निभाई। लाला लाजपतराय, लाला मुरलीधर, सरदार अजीत सिंह (शहीदे-आजम् भगत सिंह के चाचा) जैसे अनेक जुझारू स्वतंत्रता सेनानियों के साथ उनके प्रगाढ़ संबंध थे। ऐसे महापुरूष की विरासत को चौधरी रणबीर सिंह ने संभाला एवं समृद्ध भी किया।

<u>संक्षिप्त पारिवारिक विवरण</u>

पिताश्री : चौधरी मातूराम **माता जी** : श्रीमती मामकौर

दादाश्री : चौधरी बख्तावर सिंह **दादी जी** : श्रीमती धन्नो देवी

भाई-बहन : 1. डा. बलबीर सिंह 2. सुश्री चन्द्रावती 3. चौधरी फतेह सिंह

पत्नी : श्रीमती हरदेई **संतान** : 1. कैप्टन प्रताप सिंह 2. श्री इन्द्र सिंह 3. श्री भूपेन्द्र सिंह 4. श्री धर्मेन्द्र सिंह

शिक्षा व जीवन-लक्ष्य

आर्य-समाज एवं राष्ट्रभक्ति के पारिवारिक वातावरण में बालक रणबीर सिंह का पालन-पोषण हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव सांघी के ही प्राइमरी स्कूल से शुरू हुई। वर्ष 1924 में इन्हें भक्त फूल सिंह द्वारा भैंसवाल में संचालित गुरूकुल में दाखिल करवा दिया गया। वर्ष 1933 में वैश्य हाईस्कूल, रोहतक से दसवीं और वर्ष 1937 में दिल्ली के रामजस कॉलेज से स्नातक (बी.ए.) की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके उपरांत, उन्होंने आगे की वो राह चुनी, जिसने उन्हें साधारण से असाधारण शख्सियत का धनी बना दिया। उन्होंने नौकरी, व्यापार या खेतीबाड़ी करके धन-दौलत कमाने का लक्ष्य साधने की बजाय, देश की आजादी को अपना जीवन-लक्ष्य बनाया और बड़ी निर्भिकता एवं दृढ़-संकल्प के साथ स्वतंत्रता आन्दोलन के समर में रम गए। बाद में खेती से जीविका का मार्ग चुना।

स्वतंत्रता आन्दोलन में...

चौधरी रणबीर सिंह जी ने 'पूत के पाँव पलने में दिखाई देने' वाली कहावत को भलीभांति चरितार्थ किया। देशभक्ति के वातावरण में पले-पढ़े बालक रणबीर मात्र 15 वर्ष की आयु में ही अपने बड़े भाई के साथ वर्ष 1929 के ऐतिहासिक लाहौर महाधिवेशन में जा पहुंचे थे। स्नातक शिक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत उन्होंने स्वराज हासिल करने के लिए देश के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। आजादी के आन्दोलन में वे न कभी रूके, न थके और न ही झुके। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के अहिंसावादी मूल्यों को जीवन्त रखते हुए उन्होंने हर त्याग व बलिदान दिया और हर कष्ट व चुनौती का डटकर सामना किया। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान रोहतक, हिसार, अम्बाला, फिरोजपुर, मुल्तान, स्यालकोट तथा केन्द्रीय व बोर्स्टल जेल लाहौर सहित आठ जेलों में कुल साढ़े तीन वर्ष की कठोर कैद और दो साल तक नजरबन्दी काटी। लेकिन, वे कभी भी विचलित नहीं हुए। वे निरन्तर राष्ट्रपथ पर अग्रसित होते रहे।

संविधान निर्माण में योगदान

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत राष्ट्र को नयी दिशा देने के लिए एक सशक्त एवं सुलक्षित संविधान के निर्माण का सवाल खड़ा हुआ। इसके लिए 'संविधान सभा' का गठन किया गया। इस सभा के लिए चौधरी रणबीर सिंह को उनकी राष्ट्र के प्रति सेवाओं और भावनाओं को देखते हुए पंजाब (हरियाणा, उस समय पंजाब का ही हिस्सा था) क्षेत्र से चुन लिया गया। उन्होंने 14 जुलाई, 1947 को विधिवत रूप से रजिस्टर पर हस्ताक्षर करके सदन की सदस्यता हासिल की। संविधान सभा में वे सतत सक्रिय रहे और आम जन-मानस से जुड़े गहन मुद्दों और चुनौतियों से अवगत करवाया। दलितों-शोषितों और पिछड़ों की आवाज को बुलन्द किया। देहात के मर्म को सदन में बड़ी सटीकता के साथ रखा। ग्रामीण भारत के प्रखर प्रहरी बनकर विकट चुनौतियों के अनुकरणीय समाधान भी सुझाए।

अनुकरणीय राष्ट्रसेवा

चौधरी रणबीर सिंह वर्ष 1947 से 1949 तक संविधान सभा, संविधान सभा (विधायिका) के सदस्य, 1950 से 1952 अस्थाई लोकसभा के सदस्य, 1952 से 1962 पहली तथा दूसरी लोकसभा के सदस्य, 1962 से 1966 संयुक्त पंजाब विधानसभा के सदस्य, 1966 से 1967 और 1968 से 1972 तक हरियाणा विधानसभा के सदस्य और 1972 से 1978 तक राज्य सभा के सदस्य रहे। वे जिस भी पद पर रहे किसानों, मजदूरों, दलितों, पिछड़ों और असहायों के सच्चे हमदर्द बने। उन्होंने भाखड़ा बांध के निर्माण को पूरा करवाने, हरियाणा का गठन करवाने, नये बांधों की भूमिका तैयार करने, नहरों व सड़कों का जल बिछाने, शैक्षणिक संस्थाएं खुलवाने, चिकित्सा संस्थाओं का निर्माण करवाने जैसे अनेक उत्कृष्ट एवं उल्लेखनीय कार्य किये। राष्ट्र के प्रति अमूल्य एवं अनुकरणीय सेवाओं के लिए कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय ने उन्हें वर्ष 2007 में डी.लिट की मानद उपाधि से विभूषित किया और भारत सरकार ने उनकी स्मृति में डाक-टिकट जारी किया।